राजस्थान की मिट्टी और संस्कृति को समर्पित हिंदी पत्रिका

राजताज

राजस्थान के रंग, राजताज के संग

वर्ष 1 | अंक 2 | मई-जून - 2025 | पृष्ठ संख्या 28
www.rajtaj.com

कवर स्टोरी

राजस्थान की हस्त कलाएं: रेत में छुपे हुनर के मोती

www.rajtaj.com

राजताज

राजस्थान के रंग, राजताज के संग

वर्ष 1 | अंक 2| मई-जून - 2025 | पृष्ठ संख्या 28

मूल्य - आपकी मुस्कान

राजस्थान की मिटटी, संस्कृति एवं रोजमर्रा की ख़ूबसूरती को शब्दों में पिरोती साहित्यिक पत्रिका "राजताज" राजस्थान के उर्जावान शिक्षकों की अभिनव पहल है.

संपादक मंडल

मुख्य संपादक

चूना राम चौधरी
(अध्यापक)
बाड़मेर, राजस्थान

सह-संपादक

गिरधर राम
(कर्मठ अध्येता और लेखक)
बीकानेर, राजस्थान

संपादकीय सहयोगी

गोविन्द सुवालका
(अध्यापक)
भीलवाडा, राजस्थान

देवीलाल जांगिड
(अध्यापक)
जैसलमेर, राजस्थान

पोकरा राम
(अध्यापक)
बालोतरा, राजस्थान

प्रकाशन स्थल

"राजताज" शोभाला जेतमाल, चोहटन,
जिला-बाड़मेर, राजस्थान - 344702

हमसे संपर्क करें

Email- admin@rajtaj.com
Whatsapp- +919001363510

क्या आप "राजताज" नियमित प्राप्त करना चाहते है?

मूल्य: आपकी मुस्कान

सामने दिए गए सोशल मीडिया आइकन पर क्लिक करके आप हमसे जुड़ सकते है और नियमित पत्रिका घर बैठे अपने मोबाईल पर पा सकते है.

Whatsapp के आइकन पर क्लिक करने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जायेगा और नियमित पत्रिका भेजने के लिए आपका नंबर पंजीकृत हो जायेगा.

राजताज के टेलीग्राम चैनल से जुड़कर आप नियमित पत्रिका प्राप्त कर सकते है.

सामने दिए गए आइकन पर क्लिक करें और राजताज की वेबसाइट www.rajtaj.com पर विजिट करें.

ईमेल पर हमसे संपर्क करने के लिए सामने दिये गए आइकन पर क्लिक करें या admin@rajtaj.com पर मेल करें.

इस अंक में

सम्पादकीय	• सम्पादक की कलम से		5
पाठक प्रतिक्रिया	• पाठकों की कलम से		6
कवर स्टोरी	• राजस्थान की हस्त कलाएं: रेत में छुपे हुनर के मोती	चूना राम चौधरी	7
प्रेरणा के मोती	• जेफ़ बेजोस		12
गौरवशाली इतिहास	• पन्नाधाय: बलिदान और मातृभूमि के प्रति अद्वितीय निष्ठा	गिरधर राम	13
कविता	• राजस्थान – एक ख़्वाब सा	चूना राम चौधरी	16
पधारो म्हारे देश	• बीकानेर: रेगिस्तान के गुलाब की नगरी	ठाकराराम जाखड़	17
पुरानी यादें	• क्रिकेट कमेंट्री – "रेडियो पर मैच का रोमांच"		22
चित्र पहेली	• प्रतियोगिता		24
लोक रंग	• रावण हत्था: राजस्थान की संगीत का सूफ़ियाना सुर	बाबूलाल गोदारा	25

राजताज पत्रिका में संग्रहित सम्पूर्ण सामग्री लेखकों की रचनात्मक प्रतिभा का परिणाम है. जिनमें उनके निजी विचार व्यक्त हुए है. हम उनकी विचार स्वतंत्रता का सम्मान करते है. उसमे संपादक मंडल की सहमती आवश्यक नहीं.

For more update visit our website:

www.rajtaj.com

राजताज की वेबसाइट पर जाने के लिए यहाँ क्लिक करें.

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

सप्रेम नमस्कार!

हर्ष और गर्व के साथ हम आपके समक्ष अपनी ई-मैगज़ीन का द्वितीय अंक प्रस्तुत कर रहे हैं। इस अवसर पर हम सबसे पहले अपने सभी पाठकों का हृदय से आभार व्यक्त करना चाहते हैं, जिन्होंने हमारे प्रथम अंक को भरपूर स्नेह, सराहना और सकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

आपके ईमेल्स, संदेश और टिप्पणियाँ हमारे लिए केवल उत्साहवर्धक नहीं थीं, बल्कि उन्होंने हमें यह भरोसा भी दिलाया कि हम सही दिशा में हैं। कई पाठकों ने विशेष रूप से "रेगिस्तानी जीवन का अनुभव: संघर्ष और संस्कृति का संगम" और "पिताजी हमेशा कहते है बेटियां बेटों से कम है क्या - पायलट गरिमा चौधरी" की सराहना की। वहीं कुछ सुझावों के माध्यम से हमें आगे और बेहतर करने के लिए दिशा भी मिली। हम इन सभी प्रतिक्रियाओं के लिए अत्यंत आभारी हैं।

हमारी यह ई-मैगज़ीन केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि एक साझा मंच है—जहाँ राजस्थान की संस्कृति, समसामयिक मुद्दे, नवाचार, और जनमानस के विचार एक साथ सहेजे जाते हैं। इस अंक में भी हमने वही विविधता और गहराई बनाए रखने का प्रयास किया है।

चाहे वह पर्यटन स्थलों की अनदेखी झलकियाँ हों या लोक संस्कृति की विरासत, हर आलेख में आपको कुछ नया, कुछ अपना महसूस होगा।

आपका विश्वास और सहयोग ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है। कृपया इसी प्रकार हमें अपने सुझाव, लेख, कविताएँ और अनुभव भेजते रहें। यह यात्रा आपके साथ ही पूर्ण होगी।

आपके साथ के भरोसे के साथ,
– संपादक मंडल

पाठक-प्रतिकिया

"मैंने आपकी मैगज़ीन का पहला अंक पढा। वर्षों बाद कोई ऐसा माध्यम मिला जिसने मेरे भीतर की उस सांस्कृतिक चेतना को फिर से जगा दिया, जिसे भागदौड़ भरी ज़िंदगी में कहीं खो चुका था। ऐसे प्रयासों की न केवल सराहना होनी चाहिए, बल्कि समाज को इससे जोड़ने के कोशिश भी की जानी चाहिए।"
— रमाकांत शर्मा, जोधपुर

"इस पत्रिका को पढ़कर ऐसा लगा जैसे किसी ने हमारे दिल की बात कह दी हो। 'पिताजी हमेशा कहते है बेटियां बेटों से कम है क्या - पायलट गरिमा चौधरी पर लेख विशेष रूप से प्रेरणादायक रहा। इसमें जिस तरह से गाँव की महिलाओं के आत्मनिर्भर बनने की कहानी बताई गईं, वे न सिर्फ प्रेरणा देती हैं, बल्कि यह बताती हैं कि बदलाव कहीं दूर नहीं, हमारे आसपास ही हो रहा है। इस लेख को मैंने अपनी महिला समिति की बैठक में पढ़कर सुनाया, और सबने मिलकर आगे कुछ नया करने की ठानी। आपकी लेखनी में बदलाव लाने की ताक़त है।"
— रेखा चौधरी, सीकर

आपकी राय, हमारी ताकत!

प्रिय पाठकों,आपकी सहभागिता और सुझाव हमारी ई-मैगज़ीन को और बेहतर बनाने की प्रेरणा देते हैं. हम आपके विचारों, समीक्षाओं और सुझावों का स्वागत करते हैं. आपका हर एक शब्द हमें न केवल प्रोत्साहित करेगा, बल्कि हमारी सामग्री को और समृद्ध बनाएगा.

“पाठक प्रतिक्रिया” स्तंभ में आप अपने अनुभव साझा कर सकते हैं, हमारे लेखों पर अपनी राय दे सकते हैं, और उन विषयों का सुझाव दे सकते हैं जिन्हें आप पढ़ना चाहते हैं. तो देर किस बात की? सामने दिए गए whatsapp के आइकन पर क्लिक करें और अपनी प्रतिक्रियाएँ हमें भेजें और इस यात्रा का एक अहम हिस्सा बनें!

कवर स्टोरी

राजस्थान की हस्त कलाएं: रेत में छुपे हुनर के मोती

--लेख--

चूना राम चौधरी
(अध्यापक)
बाड़मेर, राजस्थान

जब भी राजस्थान का ज़िक्र होता है, तो आंखों के सामने एक ऐसा मंजर उभरता है, जहां सुनहरी रेत, ऊंट की सवारी, और रंग-बिरंगे परिधान नजर आते हैं। लेकिन इन सबके बीच, जो सबसे खास है, वो है राजस्थान की हस्त कलाएं। ये वो फन है, जो न केवल इस प्रदेश की पहचान है, बल्कि इसकी रूह में बसा हुआ है। आइए, इस "रेत के दरिया" में छुपे उन नायाब मोतियों की खोज करते हैं, जो सदियों से अपनी चमक और खूबसूरती से दुनिया को हैरान करते आ रहे हैं।

पिछवाई और फड़ पेंटिंग: रंगों की जादूगरी

राजस्थान की पेंटिंग्स की बात करें, तो पिछवाई और फड़ पेंटिंग का नाम सबसे पहले आता है। पिछवाई, जिसे खासतौर पर नाथद्वारा के श्रीनाथजी मंदिर के लिए बनाया जाता है, भगवान कृष्ण के जीवन को रंगों में सजाती है। वही, फड़ पेंटिंग कहानियों का चलता-फिरता कैनवास है। इसमें राजस्थानी लोकगाथाओं, जैसे पाबूजी और देवनारायण की कथाओं को कपड़े पर उकेरा जाता है।

"इन रंगों में छुपा है वो जादू,
जिसमें रेत भी बन जाए गुलाब का बाग।"

ब्लू पॉटरी: मिट्टी की जादूगरी

जयपुर की ब्लू पॉटरी, जिसकी जड़े फ़ारसी कला में मिलती हैं, राजस्थान की एक अनोखी कला है। नीले और सफेद रंग की यह कारीगरी मिट्टी, संगमरमर के चूरे और खास किस्म के रंगों से तैयार होती है। इससे बने फूलदान, प्लेट और टाइल्स घरों में चार चांद लगाते हैं।

"मिट्टी में छुपा हुनर ऐसा,
कि हाथ लगाते ही पत्थर भी खिल उठे।"

बंधेज और लहरिया: कपड़ों पर रंगों का जादू

राजस्थान की कढ़ाई और रंगाई की बात किए बिना हस्तकला की तस्वीर अधूरी है। बंधेज, जो टाई-डाई की तकनीक पर आधारित है, कपड़ों पर नायाब रंग और पैटर्न बनाता है। वही, लहरिया अपनी लहरदार डिजाइन के लिए मशहूर है। जयपुर, जोधपुर और उदयपुर के बाजारों में यह कला हर मोड़ पर नजर आती है।

"इन कपड़ों में बंधा है वो जादू,
जो हर लहर में समंदर का अहसास दे।"

मीनाकारी: गहनों की कहानी

अगर गहनों की बात न हो, तो राजस्थान की हस्तकला अधूरी लगेगी। जयपुर की मीनाकारी, जिसमें सोने और चांदी पर रंगीन तामचीनी का काम किया जाता है, इसे पूरी दुनिया में खास बनाता है। इससे बने झुमके, हार और चूड़ियां न केवल खूबसूरती बढ़ाते हैं, बल्कि पारंपरिक विरासत का हिस्सा भी बनते हैं।

"जिन गहनों में छुपी हो कहानियां,
वो विरासत नहीं, अमानत होती है।"

राजस्थानी कठपुतली: लकड़ी के बोलते चेहरे

राजस्थान की कठपुतली कला शायद सबसे दिलचस्प है। रंग-बिरंगी कपड़ों और लकड़ी से बनी ये कठपुतलियां लोककथाओं को जीवंत करती हैं। उदयपुर और जोधपुर के बाजारों में आपको ऐसी कठपुतलियां मिलेंगी, जो कहानी सुनाने के साथ-साथ आपको अपने बचपन की यादों में ले जाएंगी।

"इन पुतलियों में बसा वो जादू,
जो हर उम्र में मुस्कान ला दे।"

थार का जूता: पारंपरिक पहनावा

जोधपुरी मोजड़ी, जिसे हाथ से बनाया जाता है, राजस्थान के पारंपरिक जूतों का सबसे बेहतरीन नमूना है। इन पर की गई कढ़ाई, गोटा-पत्ती का काम और चमड़े की गुणवत्ता इसे खास बनाती है। बीकानेर और जैसलमेर के बाजारों में ये जूते अपनी सुंदरता से आपका ध्यान खींच लेंगे।

"इन जूतों में बसा है सफर,
जो हर कदम को खास बना दे।"

राजस्थानी गोटा-पत्ती वर्क

गोटा-पत्ती वर्क, जो कपड़ों पर किया जाता है, राजस्थान की शादियों का अहम हिस्सा है। यह सुनहरी और चांदी की पट्टियों से किया जाने वाला काम साड़ियों और लहंगों को शाही लुक देता है।
"कपड़ों पर सजी ये चमक,
हर दुल्हन के सपनों को सच कर दे।"

आधुनिकता और परंपरा का संगम

राजस्थान की हस्त कलाओं ने समय के साथ खुद को बदला है। आज ये कलाएं केवल पारंपरिक ही नहीं रहीं, बल्कि आधुनिक डिजाइन में भी ढल चुकी हैं। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और फैशन इंडस्ट्री ने इन कलाओं को नई पहचान दी है।
"परंपरा का रंग,
और आधुनिकता का ढंग,
दोनों मिलकर बनाते हैं,
राजस्थान का अनूठा संग।"

राजस्थान की हस्त कलाएं सिर्फ एक कला नहीं हैं, बल्कि यह वहां के लोगों की मेहनत, उनकी संस्कृति और उनकी पहचान का प्रतीक हैं। इन कलाओं में वो जादू है, जो न केवल आंखों को भाता है, बल्कि दिल को छू जाता है।
"रेत के इस समंदर में छुपे हैं जो मोती,
उन्हें पहचानने के लिए चाहिए एक दिल,
जो कला की कद्र करना जानता हो।"

प्रेरणा के मोती

जेफ़ बेजोस

"किसी भी उद्यम के लिए मौत की घंटी अतीत का महिमामंडन करना है। "

जेफ बेजोस एक अमेरिकी इंटरनेट उद्यमी और अमेज़ॅन के सह-संस्थापक हैं। वह हर महत्वाकांक्षी उद्यमी के लिए एक प्रेरणा और प्रेरणा हैं जिन्होंने अपने व्यवसाय को स्थापित करने के लिए सावधानीपूर्वक काम किया। जेफ को अब दुनिया के सबसे सफल और सबसे अमीर उद्यमियों में से एक माना जाता है, जिनकी संपत्ति 115.9 बिलियन डॉलर है।

"आप अपना समय और अपनी ऊर्जा कहां खर्च करेंगे, यह आपके जीवन में लिए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण निर्णयों में से एक है।"

"अगर मैं दिन में तीन अच्छे फैसले लेता हूं, तो यह काफी है। वे उतने ही उच्च गुणवत्ता वाले होने चाहिए, जितना मैं ले सकता हूं।"

"मुझे पता था कि अगर मैं असफल हो गया तो मुझे इसका अफसोस नहीं होगा, लेकिन मुझे पता था कि एक चीज जिसका मुझे अफसोस हो सकता है वह है प्रयास न करना।"

पन्नाधाय: बलिदान और मातृभूमि के प्रति अद्वितीय निष्ठा

गौरवशाली इतिहास

--लेख--

गिरधर राम
बीकानेर, राजस्थान

इतिहास के पन्नों में कुछ ऐसे नाम दर्ज हैं जो कभी धुंधले नहीं पड़ते। ये वे नाम हैं, जिन्होंने अपने स्वार्थ, भावनाओं और निजी सुखों से ऊपर उठकर देश, समाज और संस्कृति की रक्षा के लिए अतुलनीय बलिदान दिए। ऐसी ही एक महान विभूति थीं पन्नाधाय। राजस्थान की इस वीरांगना ने मातृत्व की परिभाषा को एक नए स्तर पर स्थापित किया। जहां एक माँ अपने बच्चे की सुरक्षा के लिए कुछ भी कर सकती है, वहीं पन्नाधाय ने मेवाड़ की आन, बान और शान के लिए अपने पुत्र का बलिदान देकर इतिहास में अमरत्व प्राप्त किया। उनका जीवन इंसानियत, वफ़ादारी और क़ुर्बानी का एक अप्रतिम उदाहरण है।

इतिहास के परिप्रेक्ष्य में पन्नाधाय

15वीं शताब्दी का मेवाड़, जहां वीरता, इज़्ज़त और उसूल जीवन की सबसे बड़ी धरोहर मानी जाती थी। यह वह दौर था जब बाहरी आक्रमणकारियों की नज़र हिंदुस्तान की रियासतों पर थी। मेवाड़ के राजा राणा सांगा के वंशज और उदयपुर के संस्थापक राणा उदयसिंह का जीवन संकट में था। उनके पिता राणा सांगा के निधन के बाद, उनके उत्तराधिकारी बने राणा विक्रमादित्य, जो शासक के रूप में अधिक सफल नहीं रहे। इसी बीच, मेवाड़ के तख़्त पर अधिकार जमाने की फिराक़ में एक कुटिल बैठा था – बनवीर।

बनवीर, जो राणा सांगा के सौतेले भाई पृथ्वीराज का पुत्र था, सत्ता की हवस में अंधा हो चुका था। उसने विक्रमादित्य की हत्या कर दी और अब उसका अगला निशाना था महल में खेलता मासूम उदयसिंह। यह वह नाज़ुक घड़ी थी जब वफ़ादारी और फ़र्ज़ की सच्ची परीक्षा हुई। पन्नाधाय केवल एक राजकुमार की धाय माँ ही नहीं थीं, बल्कि वे इंसानियत और वफ़ा की मिसाल थीं। जब उन्हें बनवीर के षड्यंत्र की ख़बर मिली, तो उन्होंने बिना विचार-विमर्श किए एक कठोर निर्णय लिया। उन्होंने अपने बेटे को महल में सुला दिया और उदयसिंह को महफ़ूज़ स्थान पर भेज दिया।

क्या गुज़री होगी उस माँ के दिल पर?

जिस माँ ने अपने बच्चे को अपनी गोद में खिलाया, जिसके चेहरे की मासूमियत और ताजगी उनकी पूरी दुनिया थी, वही माँ उसे मौत के सुपुर्द कर रही थी। लेकिन, देश की रक्षा और अपनी वफ़ादारी निभाने के लिए उन्होंने यह महान कुर्बानी दी।

जब बनवीर अपने सैनिकों और जल्लादों के साथ आया और शहज़ादे की माँ से बच्चे की पहचान करवाई, तो वह नन्हा शहीद ही था जो अपने छोटे से जीवन में मेवाड़ की शान के लिए विदा हो गया।

पन्नाधाय: मातृत्व की नई परिभाषा

"माँ तो वह भी थी, पर वह केवल अपने पुत्र की माँ नहीं थी, वह संपूर्ण मातृभूमि की माँ थी।"
इतिहास में माँ की ममता की अनेक कहानियाँ मिलती हैं, पर पन्नाधाय की गाथा में ममता के साथ-साथ ईमानदारी, महानता और बलिदान का अनोखा संगम है।
अगर कोई आम माँ होती तो वह अपने पुत्र को बचाने के लिए कुछ भी कर सकती थी। मगर पन्नाधाय के लिए राष्ट्र सर्वोपरि था। उन्होंने अपने आंसुओं को भीतर समेट लिया, अपने दुःख को प्रशंसा योग्य बना दिया, और मेवाड़ की सल्तनत को बचाने का संकल्प लिया।

मेवाड़ की रक्षा के लिए संघर्ष

अपने पुत्र को खोने का ग़म किसी भी माँ के लिए असहनीय होता है। मगर पन्नाधाय ने अपने आँसुओं को कमजोरी नहीं बनने दिया, बल्कि उन्होंने अपने क़दमों को मज़बूत रखा और चित्तौड़गढ़ से बाहर निकलकर उदयसिंह को सुरक्षित स्थान तक पहुँचाया।
उदयसिंह को बचाकर उन्होंने यह सिद्ध किया कि निष्ठा और ईमानदारी से किया गया क़दम किसी भी राज्य की क़िस्मत बदल सकता है। जब समय आया, तो उदयसिंह ने अपने राज्य को फिर से संगठित किया और मेवाड़ की शान को फिर से स्थापित किया।

साहित्य में पन्नाधाय

कई कवियों और लेखकों ने पन्नाधाय की गाथा को अपने शब्दों में गाया है। प्रसिद्ध कवि शिवदान सिंह 'भावुक' ने उनके बलिदान पर लिखा –

"धाय माँ का धैर्य देख, काँप उठी तक़दीर,
बलिदानों की धरती ने देखी मातृ साख शमशीर।"

राजस्थानी लोकगीतों में भी पन्नाधाय को अमर कर दिया गया। लोक कवि कहते हैं –

"मातृभूमि बचे तो, बलिदान भी सस्ता है,
पन्नाधाय का नाम, शौर्य का एक बस्ता है।"

पन्नाधाय की सीख

पन्नाधाय की कहानी हमें यह सिखाती है कि –

- कर्तव्य सर्वोपरि है – निजी भावनाओं से ऊपर उठकर हमें अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए।
- वफ़ादारी का कोई मोल नहीं – उन्होंने यह साबित किया कि सच्ची निष्ठा केवल शब्दों में नहीं, बल्कि कर्मों में होती है।
- बलिदान अमर होते हैं – उनका बलिदान न केवल इतिहास में अमर हो गया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बन गया।

पन्नाधाय केवल एक ऐतिहासिक चरित्र नहीं हैं, वे भारत की आत्मा, वीरता की पहचान और मातृत्व की सबसे ऊँची परिभाषा हैं। उनका त्याग हमें यह सिखाता है कि कर्तव्य और देशप्रेम से बड़ा कुछ नहीं।

आज जब हम अपने निजी जीवन में स्वार्थ, संदेह और असमंजस से घिरे रहते हैं, तो हमें पन्नाधाय की कहानी याद करनी चाहिए। उन्होंने बिना किसी भय या दुविधा के वह किया जो सही था। उनका जीवन ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता और बलिदान की सबसे ऊँची मिसाल है।

कविता

राजस्थान – एक ख़्वाब सा

--लेख--

चूना राम चौधरी
(अध्यापक)
बाड़मेर, राजस्थान

रेत की सरज़मीं, फ़िज़ा में रवानी है,
हर क़दम पर बसी इक पुरानी कहानी है।
क़िले, हवेलियाँ और बारीक नक़्क़ाशी,
हर दीवार पर बसी हृदय की गहराई है।

चांदनी रातों में पधारो की रिवाजें हैं,
मेहमाननवाज़ी यहाँ की रिवायतें पुरानी हैं।
घोड़े की टापों में सुनी जो शहादत,
वो राणा की तलवार और चेतक की जवानी है।

बाजारों में गुलाब की ख़ुशबू महकती है,
बाँधनी और मोजड़ी हर दिल को भाती है।
फ़लकों सा ऊँचा है यहां का एहतराम,
हर रंग में बसी मोहब्बत की रवानी है।

दरगाहों की महफ़िल, मंदिरों का उजाला,
यहाँ मज़हब से ऊपर है इंसानियत का रिश्ता निराला।
रेगिस्तान भी यहाँ नज़्मों में ढल जाता है,
हर सहरा में भी इश्क़ मुस्कराता है।

राजस्थान कोई सूबा नहीं, एक जज़्बा है,
हर धड़कन में इसकी मिट्टी का असर रहता है।
जो एक बार आए, वो यहीं का हो जाए,
ये वतन नहीं, दिलों की रियासत बन जाए।

पधारो म्हारे देश

बीकानेर: रेगिस्तान के गुलाब की नगरी

--लेख--

ठाकराराम जाखड़
बाड़मेर, राजस्थान

राजस्थान की धरती अपनी ऐतिहासिक धरोहरों, समृद्ध संस्कृति, और गर्मजोशी भरे मेहमाननवाज़ी के लिए जानी जाती है। इसी धरती पर बसा बीकानेर, एक ऐसा शहर है, जिसे रेगिस्तान का गुलाब कहा जाता है। यह शहर अपनी शानदार हवेलियों, भव्य किलों, और लज़ीज़ व्यंजनों के लिए मशहूर है। बीकानेर की गलियों में घूमते हुए ऐसा महसूस होता है जैसे इतिहास और आधुनिकता का मिश्रण आपकी आंखों के सामने सजीव हो गया हो।

बीकानेर का इतिहास और निर्माण

बीकानेर का इतिहास 1488 ई. में राव बीका द्वारा इस शहर की बुनियाद रखने से शुरू होता है। कहा जाता है कि राव बीका ने

अपनी बहादुरी और बुद्धिमत्ता से इस बंजर भूमि को एक खूबसूरत शहर में बदल दिया। बीकानेर के किले, मंदिर और बाजार इस बात के गवाह हैं कि यह शहर न केवल सांस्कृतिक रूप से समृद्ध है, बल्कि वास्तुकला के क्षेत्र में भी अद्वितीय है।

जूनागढ़ किला: एक भव्य धरोहर

बीकानेर का जूनागढ़ किला, जिसे "जमीन के जेवर" के नाम से भी जाना जाता है, शहर का प्रमुख आकर्षण है। यह किला 16वीं शताब्दी में राजा राय सिंह द्वारा बनवाया गया था। लाल बलुआ पत्थरों और संगमरमर से बने इस किले की दीवारों पर नक्काशी और चित्रकारी बेमिसाल है।
किले के भीतर बने "करण महल," "फूल महल," और "अंश महल" जैसे भाग अपनी भव्यता के लिए प्रसिद्ध हैं। इन हिस्सों में राजस्थानी और मुगल कला का अनूठा इज़हार देखने को मिलता है। किले की वास्तुकला में न केवल राजपूत शैली की झलक है, बल्कि इसमें गुजराती और बंगाली कलाओं का भी असर दिखाई देता है।

लालगढ़ पैलेस: रजवाड़ों की शान

लालगढ़ पैलेस, जो महाराजा गंगा सिंह द्वारा बनवाया गया था, बीकानेर की शाही शान का प्रतीक है। यह महल राजस्थानी, मुगल, और यूरोपीय वास्तुकला का शानदार नमूना है। यहां का संग्रहालय, जिसमें प्राचीन अस्त्र-शस्त्र, हस्तशिल्प, और चित्र प्रदर्शित हैं, सैलानियों को इतिहास की खुशबू से रूबरू कराता है।

ऊंट अनुसंधान केंद्र: बीकानेर की पहचान

बीकानेर ऊंटों की नगरी के नाम से भी प्रसिद्ध है। यहां स्थित ऊंट अनुसंधान केंद्र, दुनिया में अपनी तरह का अनोखा केंद्र है। इस केंद्र में आपको ऊंटों की विभिन्न नस्लों के बारे में जानने का मौका मिलता है। साथ ही, यहां ऊंटनी के दूध से बने लज़ीज़ उत्पाद जैसे आइसक्रीम और मिठाइयां भी मिलती हैं।

करनी माता का मंदिर: आस्था का केंद्र

बीकानेर से 30 किलोमीटर दूर देशनोक में स्थित करनी माता का मंदिर, जिसे "चूहों का मंदिर" भी कहा जाता है, दुनिया भर में अपनी अनोखी मान्यताओं के लिए जाना जाता है। इस मंदिर में हजारों चूहे रहते हैं, जिन्हें "काबा" कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि ये चूहे करनी माता के भक्तों की रूहें हैं। मंदिर का संगमरमर से बना प्रवेश द्वार और चांदी से सजे दरवाजे इसकी दिलकशी को और बढ़ा देते हैं। यह स्थान न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि यह वास्तुकला और लोककथाओं का भी मरकज़ है।

थार रेगिस्तान का सौंदर्य

बीकानेर की सैर बिना थार रेगिस्तान का लुत्फ़ उठाए अधूरी है। यहां की रेत पर ऊंट सफारी करना और खुले आसमान के नीचे सितारों की छांव में रात बिताना एक ऐसा अनुभव है, जो हमेशा याद रहता है। रेगिस्तान की खामोशी में भी एक अल्फ़ाज़ छुपा होता है, जो दिल को सुकून देता है।

बीकानेरी रसगुल्ला: मिठास का अनोखा स्वाद

बीकानेर का नाम सुनते ही सबसे पहले बीकानेरी रसगुल्ला और भुजिया का ख्याल आता है। यहां के रसगुल्ले अपने नफ़ीस स्वाद और मुलायम बनावट के लिए मशहूर हैं। इसके अलावा, बीकानेरी भुजिया तो पूरे विश्व में अपनी पहचान बना चुका है। इसका चटपटा स्वाद हर किसी को अपना दीवाना बना देता है।

गंगानगर झील: सुकून का एहसास

गंगानगर झील, जिसे गजनेर झील के नाम से भी जाना जाता है, बीकानेर से थोड़ी दूरी पर स्थित है। यह झील अपने प्राकृतिक सौंदर्य और शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। झील के किनारे बने गजनेर पैलेस को अब एक शानदार होटल में बदल दिया गया है, जहां सैलानी रुककर शाही जीवन का अनुभव कर सकते हैं।

लोक संस्कृति का जादू

बीकानेर की संस्कृति यहां के लोक संगीत, नृत्य, और मेले-त्योहारों में झलकती है। यहां का ऊंट उत्सव, जो हर साल जनवरी में आयोजित किया जाता है, बीकानेर की लोक संस्कृति का प्रमुख इज़हार है। इस उत्सव में ऊंटों की साज-सज्जा, दौड़, और नृत्य जैसे कार्यक्रम होते हैं। इसके साथ ही, लोक संगीत और राजस्थानी व्यंजनों का आनंद सैलानियों के अनुभव को और भी यादगार बना देता है।

खरीदारी का मज़ा

बीकानेर के बाजार अपनी हस्तशिल्प वस्तुओं, चमड़े की जूतियों, और राजस्थानी आभूषणों के लिए मशहूर हैं। यहां के कपड़े, खासकर बंधेज और लहरिया शैली के वस्त्र, पर्यटकों को खूब आकर्षित करते हैं। इसके अलावा, काष्ठ कला और हाथ से बनी वस्तुएं भी यहां की संस्कृति का हिस्सा हैं।

बीकानेर की रातें: जादुई अनुभव

बीकानेर की रातें थार रेगिस्तान में और भी खास हो जाती हैं। कैंपिंग का अनुभव, लोक संगीत और नृत्य के साथ, इस शहर की सैर को यादगार बना देता है। रेगिस्तान में जलते अलाव के पास बैठकर ढोलक की थाप पर थिरकते कलाकार, जीवन की सादगी और खुशी का प्रतीक हैं।

बीकानेर एक ऐसा शहर है, जहां इतिहास, संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। यह शहर न केवल अपनी दिलकशी और रौनक़ के लिए मशहूर है, बल्कि यह हर सैलानी के दिल में अपनी खास जगह बना लेता है। बीकानेर की हवाओं में रेत की सौंधी खुशबू और यहां के लोगों की मोहब्बत हर किसी को यहां बार-बार आने के लिए मजबूर कर देती है।

तो अगर आप कभी राजस्थान की सैर पर जाने का इरादा करें, तो बीकानेर को अपनी यात्रा का हिस्सा जरूर बनाएं। यह शहर आपको अपनी खुशबू और शान से कभी निराश नहीं करेगा।

अगर आप अपने शब्दों के मोती "राजताज" की माला में पिरोना चाहते है तो संपर्क करें

"राजताज" हेतु आप भी रचनाएँ भेज सकते है. आलेख, समीक्षा, इतिहास, कला, विज्ञान, रोजगार, धरोहर, साक्षात्कार, शोध परक लेख, यात्रा वृतांत, लोक साहित्य, कविता, गीत, गजल, किस्सा-कहानी, व्यंग्य, संस्मरण, पुस्तक-समीक्षा आदि साहित्य की सभी विधाओं में रचनाओं का स्वागत है.

आपकी रचना मौलिक और अप्रकाशित है. इस बात का उल्लेख किया जाना चाहिए. रचनाएँ अपना नाम, पता, तस्वीर और परिचय सहित admin@rajtaj.com पर ई-मेल भेजें. आपके लेख वेबसाइट पर भी प्रकाशित किये जायेंगे.

हम ऐसी रचनाओं की स्वीकार नहीं करते है जो समाज की भावनाओं को ठेस पहुंचाती हों, किसी वर्ग या किसी विशेष समुदाय, किसी राजनीतिक पार्टी के समर्थन या आलोचना से ग्रस्त हो.

पुरानी यादें

क्रिकेट कमेंट्री – "रेडियो पर मैच का रोमांच"

आज के जमाने में लाइव स्ट्रीमिंग, सुपर-स्लो मोशन रिप्ले और स्टंप माइक जैसी तकनीकें हैं, लेकिन कभी रेडियो पर क्रिकेट सुनने का जो मज़ा था, वो अब कहाँ! आँखों के सामने कुछ नहीं होता था, लेकिन दिमाग में पूरा स्टेडियम बस जाता था।

रेडियो पर मैच सुनना मतलब सिर्फ़ क्रिकेट नहीं, बल्कि "कल्पना की उड़ान" और "मोहल्ले की हलचल" भी होती थी। जैसे ही कमेंट्री शुरू होती, मोहल्ले के लोग रेडियो के इर्द-गिर्द जमा हो जाते, और फिर कानों को उस छोटे से ट्रांजिस्टर से जोड़ लेते।

"नमस्कार दोस्तों! मैं आकाशवाणी से बोल रहा हूँ... आज भारत और पाकिस्तान के बीच महामुकाबला है... पूरे स्टेडियम में एक जबरदस्त माहौल है... भारतीय कप्तान ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया है!"

"कपिल देव ने दौड़ते हुए गेंद फेंकी... बल्लेबाज ने शॉट खेला... गेंद हवा में... और... और..."

बस, इस 'और... और...' में ही जान अटक जाती! सबकी आँखें बंद, कान तने हुए, कोई हवा भी तेज़ी से नहीं लेता था। तभी अचानक रेडियो में खरखराहट आ जाती – "कृर्रर्र... श्श्श्श... और... दर्शकों की तालियाँ बता रही हैं कि ये चौका था!"

अरे! चौका था, छक्का था, कैच आउट था, ये सब बाद में पता चलता, पहले तो दिमाग में भूचाल आ जाता कि आखिर हुआ क्या?

अगर रेडियो में आवाज़ कम हो जाए या सिग्नल टूटने लगे, तो तुरंत पूरा मोहल्ला एक्शन में आ जाता था। कोई छत पर दौड़कर एंटीना घुमाने लगता, तो कोई रेडियो को ज़मीन से उठाकर हवा में लहराने लगता, मानो ऊँचाई से पकड़ने पर कमेंट्री साफ़ सुनाई देगी! कुछ जुगाड़ू लोग तो रेडियो के तार में स्टील की चम्मच या तांबे का तार लपेट देते थे – "अब आ रही है? हाँ, अब सही है!"

आखिरी ओवर – धड़कनों की परीक्षा

मैच अगर आखिरी ओवर तक पहुंच गया, तो फिर समझो पूरा गाँव-पड़ोस एक रेडियो पर टिक जाता। सबकी आँखें रेडियो के डायल पर टिकी होतीं, कान रेडियो से चिपके होते, और दिल की धड़कन बढ़ जाती।

"आखिरी गेंद... जीतने के लिए दो रन चाहिए... गेंदबाज दौड़ता हुआ आया... गेंद फेंकी..."

तभी रेडियो में गड़बड़ – "कृर्रर्र... श्श्श्श..."

"अबे! क्या हुआ? सिग्नल गया!"

सब रेडियो को पकड़कर हिलाने लगते, छत पर चढ़कर एंटीना घुमाने लगते, और तभी आवाज़ आती – "दर्शकों की खुशी बता रही है कि भारत ने मैच जीत लिया!"

बस फिर क्या था – मोहल्ले में ढोल-नगाड़े बजने लगते, लोग नाचने-कूदने लगते, और कुछ लोग रेडियो के आगे हाथ जोड़कर उसे ही किस्मत का देवता मान लेते!

आज भले ही टीवी और मोबाइल पर HD क्वालिटी में लाइव मैच दिखता हो, लेकिन वो रोमांच, वो इंतज़ार, वो सस्पेंस और वो जुगाड़... रेडियो पर क्रिकेट सुनने का जो मज़ा था, वो अब कहाँ!

चित्र पहेली

इस चित्र पर अपनी रचनात्मकता का परिचय देते हुए कुछ लिख भेजें-
कविता, लघुकथा या कैप्शन.

सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि को पुरस्कृत किया जाएगा. प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि 25 अप्रैल, 2025 है. प्रविष्टि admin@rajtaj.com पर ईमेल भेजें या +919001363510 पर whatsapp सन्देश भेजें.

लोक रंग

रावण हत्था: राजस्थान की संगीत का सूफ़ियाना सुर

--लेख--

बाबूलाल गोदारा
बाड़मेर, राजस्थान

राजस्थान की मिट्टी में संगीत की जो रवायतें बसती हैं, वे सदियों पुरानी हैं। इस रेतीले प्रदेश की फिज़ा में जो सुर घुले हुए हैं, वे केवल ध्वनि नहीं, बल्कि एक रूहानी अहसास हैं। इन्हीं सुरों की महक में एक नाम रावण हत्था का भी है, जो अपनी जादुई धुनों से दिलों को मोह लेता है। यह केवल एक वाद्य यंत्र नहीं, बल्कि राजस्थान की संस्कृति, परंपरा और लोक संगीत का जीता-जागता निशान है। इसकी हर तान में रेगिस्तान की ख़ामोशी, अमावस की रात, चूड़ियों की खनक और प्रेम के विरह का एहसास छुपा हुआ है।

रावण हत्था का ऐतिहासिक सफर

रावण हत्था का इतिहास काफ़ी पुराना और दिलचस्प है। लोकमान्यताओं के मुताबिक, यह वाद्य यंत्र रावण ने खुद तैयार किया था और इसका प्रयोग भगवान शिव की उपासना में किया जाता था। इसलिए इसका नाम "रावण हत्था" पड़ा। लेकिन यह महज़ एक किवदंती नहीं, बल्कि इस वाद्य यंत्र का सफर लंका से राजस्थान और गुजरात होते हुए पूरे भारत और दक्षिण एशिया तक फैला।

मध्यकाल में जब राजस्थान की रियासतें अपनी कलात्मक संस्कृति को बढ़ावा दे रही थीं, तब लंगा और मांगणियार जैसे लोक कलाकारों ने इस यंत्र को अपनाया और इसे राजदरबारों से लेकर आम जनजीवन तक पहुँचा दिया। आज भी जब रेगिस्तान में किसी जिप्सी कलाकार के हाथों में यह साज़ होता है, तो वह किसी दरवेश की तरह सूफ़ियाना नज़्मों में रूहानी रंग घोलता है।

बनावट: सादगी में छुपी नज़ाकत

रावण हत्था की बनावट बेहद नफीस और सादा होती है, लेकिन इसकी बनावट ही इसे ख़ास बनाती है। इसे बनाने के लिए ज़्यादा जटिल सामग्री की ज़रूरत नहीं होती, लेकिन इसकी हर चीज़ में एक अनूठी शिल्पकला छिपी होती है। इसका मुख्य ढांचा लकड़ी से बना एक लंबा डंडा होता है, जो इसकी गर्दन का काम करता है। इसका तबला या गुंबदनुमा भाग नारियल के खोल या लकड़ी से बना होता है, जिस पर बकरी की खाल मढ़ी जाती है। दो से तीन तार इसमें लगाए जाते हैं, जिन्हें घोड़े की पूंछ के बालों से बने धनुष से बजाया जाता है। धनुष पर रेज़िन लगाया जाता है, जिससे सुरों में गहराई और कशिश पैदा होती है।

यही सादगी इसकी सबसे बड़ी ख़ूबसूरती है। जब कोई कलाकार इसे अपने हाथों में लेता है और उसकी उंगलियां तारों पर थिरकती हैं, तो मानो किसी सूफ़ी फकीर की आवाज़ गूंज उठती है।

संगीत में इसकी अहमियत

राजस्थान का संगीत किसी भी क़िस्म के ग़म और खुशी को अपने सुरों में समेटने का हुनर रखता है, और रावण हत्था इसी हुनर का एक नायाब तोहफ़ा है। इसकी धुनें सुनते ही मन किसी रेगिस्तानी सफर पर निकल पड़ता है, जहाँ कभी ऊँटों की पदचाप की लय सुनाई देती है तो कभी किसी विरहणी का दर्द।

राजस्थान के लोक कलाकार इसे सूफ़ियाना कव्वालियों में, भवाई नृत्य और पिंगल भाषा की लोकगाथाओं में इस्तेमाल करते हैं। यह न केवल राजस्थान, बल्कि गुजरात, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल और यहां तक कि श्रीलंका और इंडोनेशिया में भी बजाया जाता है। पुराने समय में राजस्थानी वीर-रस की गाथाओं, जैसे पाबूजी की फड़ और देवनारायण की कथा में इसका इस्तेमाल प्रमुखता से होता था।

मॉडर्न संगीत में रावण हत्था की वापसी

आज भी कई फ़िल्मों और फ़्यूज़न संगीत में रावण हत्था की धुनें सुनाई देती हैं। बॉलीवुड फिल्मों जैसे "पद्मावत" और "बाजीराव मस्तानी" में इस यंत्र का जादू बिखरा है। कई संगीतकार इसे पश्चिमी वाद्य यंत्रों के साथ मिलाकर एक नया और अद्भुत मिश्रण तैयार कर रहे हैं।

रावण हत्था का अनूठा स्वर आज भी दुनिया भर में अपने प्रशंसकों को संगीत के सूफ़ियाना सफर पर ले जा रहा है। चाहे वह राजस्थान के रेगिस्तान की कोई तन्हा रात हो या किसी महल की रोशनियां – जब रावण हत्था की झंकार फिज़ा में गूंजती है, तो दिलों में एक अजीब सी कसक और सुकून एक साथ उतर आते हैं।

एक धरोहर जो अमर है

रावण हत्था केवल एक वाद्य यंत्र नहीं, बल्कि राजस्थान की संगीत परंपरा का एक ज़िंदा दस्तावेज़ है। यह हमें हमारी जड़ों से जोड़ता है, अतीत की कहानियों में झांकने का मौका देता है और लोक संगीत की अनमोल धरोहर की याद दिलाता है।

जब भी इसकी धुनें बजती हैं, तो ऐसा लगता है मानो कोई पुरानी प्रेम कहानी, कोई वीरता की गाथा या किसी बंजारन की अनसुनी पुकार हमसे रू-ब-रू हो रही हो। यह यंत्र हमें सिखाता है कि संगीत सिर्फ़ मनोरंजन का ज़रिया नहीं, बल्कि इबादत, इश्क़ और विरासत की एक जादुई दुनिया भी हो सकता है।

रावण हत्था: राजस्थान की मिट्टी से निकला वह साज़, जिसकी हर तान में सदियों की रूहानी गूंज बसी है!

आप सभी का हार्दिक आभार